# भारत-जापान व्यावसायियों की मध्याह्न भोज बैठक में प्रधानमंत्री का भाषण

**15 दिसम्बर, 2006**
**टोक्यो**

मुझे जापान के कारोबार और उद्योग के अग्रणी नेताओं की इस सम्मानीय बैठक में उपस्थित होकर अत्यंत खुशी हो रही है और मैं अपने आपको सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं इस अवसर पर आप सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं कि आप सभी ने यहां आने के लिए समय निकाला।

1991 के भुगतान संतुलन संकट के दौरान जापान ने भारत को जो मदद पहुंचाई उसकी यादें अभी भी मेरे दिमाग में ताजा हैं। यही नहीं इसके अलावा जापान से लम्बे जुड़ाव की और भी कई स्मृतियां मैंने अपने मन में संजो कर रखी हैं। जापान ने विपत्ति के समय वास्तव में भारत के साथ एक सच्चे दोस्त का रिश्ता निभाया है। भारत में आर्थिक सुधार के शुरूआती दिन अब विगत की बात हो गए हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि पिछले 15 सालों के दौरान कई सरकारें बदलने के बावजूद भारत हमारे द्वारा 1991 में शुरू किए गए आर्थिक सुधारों और उदारीकरण के रास्ते पर चलता रहा है।

भारतीय अर्थव्यवस्था अब तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर है। दो दशकों तक हमारी अर्थव्यवस्था लगभग 6 फीसदी की वार्षिक की दर से विकास की ओर अग्रसर थी, लेकिन पिछले चार सालों में हमारे देश में विकास की दर 8 प्रतिशत वार्षिक पर पहुंच गई है। मौजूदा वित्तीय वर्ष की पहली छमाई में विकास दर ने 9.1 फीसदी की नई ऊंचाई को छुआ है। विकास दर के मामले में, विनिर्माण क्षेत्र तेजी से सेवा क्षेत्र के नजदीक पहुंचता जा रहा है। इन दोनों क्षेत्रों का हमारी राष्ट्रीय आय में लगभग 80 फीसदी योगदान है।

यह उल्लेखनीय विकास सकल घरेलू उत्पाद की 31 प्रतिशत निवेश द्वारा संचालित हो रहा है। इस प्रकार, इस विकास के लिए लगभग संपूर्ण वित्तपोषण घरेलू बचत से हो रहा है, जोकि 29 प्रतिशत से अधिक है। भारत के स्थिर वृहद- आर्थिक संकेतकों से मुझे विश्वास हो चला है कि आने वाले वर्षों में हम दो अंकों में विकास दर हासिल कर सकते हैं।

उच्च विकास दर को स्थाई बनाना ही हमारे लिए चुनौती नहीं है बल्कि इस प्रक्रिया में समानता और पर्यावरण स्थायित्व को शामिल करना भी एक चुनौती है। इस विकास से देश के करोड़ों नागरिकों को गरीबी से उभारने में मदद मिली है। यह इस बात से स्पष्ट है कि 70 के दशक में गरीबी अनुपात 50 प्रतिशत से ऊपर था, जो आज गिरकर 20 प्रतिशत से नीचे आ गया है। इससे देश में उपभोक्ता बाजार का काफी विकास हुआ है।

भारतीय लोगों की सृजनशीलता और उद्यमिता के विकास तथा वृद्धि और समानता की तलाश की इस यात्रा में हम जापान को एक सक्रिय भागीदार बनाना चाहते हैं।

पिछले सालों में जापान ने अपने राजकीय विकास सहायता कार्यक्रम के जरिए हमारी जो सहायता की है, हम उसकी दिल से सराहना करते हैं। देहली मेट्रो भारत-जापान सहयोग का एक प्रत्यक्ष प्रतीक बन चुकी है और हमें ऐसे ही कई अन्य परियोजनाओं का इंतजार है। ये परियोजनाएं हमारे नागरिकों के दैनिक जीवन में सुखद बदलाव ला सकती हैं।

हमारा ध्यान आने वाले वर्षों में जापान के कारोबार और उद्योग के साथ और ज्यादा गहरे और व्यापक रिश्ते कायम करने पर केन्द्रित रहेगा। हमारे मौजूदा आर्थिक रिश्ते क्षमता से काफी कम हैं। मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ है कि 1990 के दशक में विदेशी निवेश तथा व्यापार प्रवाह के मामले में भारत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में जापान अन्य पूर्वी एशियाई तथा दक्षिणी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं से पिछड़ गया था।

यह सच है कि दक्षिण कोरिया के उपभोक्ता ब्रांडों ने भारत में गहरी पहुंच बनाई है और हमारे देश के उपभोक्ताओं ने इन ब्रांडों का काफी सम्मान भी है। व्यापार के मामले में भारत का चीन और दक्षिण कोरिया के साथ व्यापार बड़ी तेजी से आगे बढ रहा है और पिछले वर्ष तो इन दोनों देशों के साथ भारत का व्यापार 40 फीसदी की दर से बढ़ा। चीन का भारत के साथ व्यापार भारत का जापान के साथ व्यापार का तीन गुना है और कोरिया का भारत के साथ व्यापार लगभग जापान का भारत के साथ व्यापार के बराबर है।

अब समय आ गया है कि जापानी कंपनियां इस स्थिति को बदलें। जापान को एशिया में हमारे सबसे महत्वपूर्ण कारोबारी साझेदार का ऐतिहासिक स्तर फिर से हासिल करना चाहिए। भारत के मोटर वाहन तथा अन्य उद्योगों के विकास में जापानी कंपनियों की महत्वपूर्ण भूमिका को हम भूल नहीं सकते। निश्चय ही हम लोगों के सामने यह सब एक चुनौती है। मैं जापान के कारोबारी समुदाय को निमंत्रण देता हूं कि वे मेरे देश में मौजूद अवसरों का पूरा लाभ उठाएं।

मुझे इस बात की खुशी है कि अब इस रुझान में बदलाव के संकेत मिल रहे हैं। 2004 की समाप्ति के बाद से जापान ने भारत के पूंजी बाजार में 5 अरब डॉलर से ज्यादा का निवेश किया है। यह भारत में निवेश की क्षमताओं और फायदों का प्रत्यक्ष प्रमाण है और मुझे आशा है कि इससे प्रत्यक्ष निवेश के लिए रास्ता और ज्यादा प्रशस्त होगा। मुझे यह भी बताया गया है कि पिछले तीन सालों में भारत ने जापानी कंपनियों की संख्या में 50 फीसदी की वृद्धि हुई है।

मुझे आशा है कि आपने 2005 में आयोजित **जेटरों** सर्वे के निष्कर्षों को ध्यान में रखा होगा। इस सर्वे में निष्कर्ष निकाला गया है कि सभी आसियान देशों की तुलना में भारत में जापानी विनिर्माण कंपनियों के लाभ कमाने की संभावना सबसे ज्यादा है। इसके फलस्वरूप भारत में 90 प्रतिशत से अधिक ऐसी कंपनियों ने अगले दो वर्षों में अपने कारोबार में विस्तार करने की योजना बनाई है। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप प्रवेश की शुरूआती समस्याओं की तुलना में भारत में कारोबार करने के दीर्घावधि फायदे और स्थायित्व को महत्व दें।

आज आर्थिक रूप से प्रगतिशील भारत में परम्परागत तथा नये क्षेत्रों, दोनों ही में श्रम, गहनता, और ज्ञान आधारित उद्योगों में कई तरह के निवेश संबंधी अवसर उपलब्ध हैं। भारत और जापान बायो-टैक्नोलोजी, नैनो-टैक्नोलोजी, सूचना-प्रौद्योगिकी, ऑटो-मोबाइल्स तथा एयरो-स्पेस, टैक्सटाइल्स व चमड़ा, समुद्री उत्पाद तथा कई अन्य क्षेत्रों में साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

मुझे भारत में कारोबार करने के बारे में जापानी कंपनियों की चिंताओं की जानकारी है। हमारी सरकार निवेशकों की सभी वैधानिक चिंताओं से निपटेगी। हम बुनियादी सुविधाओं में सुधार करने, कराधान प्रणाली को सरल बनाने, शुल्कों में और कमी करने, प्रशासनिक देरियों को समाप्त करने जैसे कदम उठाने के लिए कटिबद्ध हैं। हमने इन सभी क्षेत्रों में काफी प्रगति की है, लेकिन मुझे यह भी पता है कि अभी काफी कुछ किया जाना है। हम अपनी हर संभव कोशिश करेंगे।

हमारी सरकार का ध्यान देश में विश्व स्तर का बुनियादी ढांचा तैयार करने पर केन्द्रित है। मैं बुनियादी ढांचा समिति के प्रमुख के रूप में हर तिमाही में सभी प्रमुख बुनियादी सुविधा परियोजनाओं का व्यक्तिगत रूप से जायजा लेता हूं। हमने अनुमान लगाया है कि अकेले बुनियादी

ढांचा क्षेत्र में ही अगले पांच वर्षों में भारत में कम से कम 320 अरब डॉलर के निवेश की जरूरत होगी। हमारा अनुमान है कि हमारी कुल निवेश संबंधी जरूरत 500 अरब अमरीकी डॉलर के आसपास होगी। इसके लिए हमारी अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक तथा निजी, घरेलू तथा विदेशी साझेदारी की जरूरत है। हम विदेशी निवेश का स्वागत करते हैं और व्यापक स्तर पर सार्वजनिक-निजी भागीदारी बढ़ाने के इच्छुक हैं।

ऐसी अभिनव सार्वजनिक-निजी भागीदारी के हिस्से के रूप में, हमने अनुदान सहायता का प्रावधान किया है। इसके लिए एक **"व्यावहर्यता अंतर कोष"** प्रणाली बनाई गई है और दीर्घावधि वित्त पोषण के लिए बुनियादी ढांचा विकास वित्त कंपनी नाम से एक विशेष कोष बनाया गया है। भारत में मात्रात्मक और गुणात्मक रूप में शिक्षा के विस्तार से हम एक अत्यंत उत्पादक कार्यबल तैयार कर पाएंगे, जिसमें कई प्रकार के कौशल शामिल होंगे।

जापान में 70 भारतीय सापऊटवेयर कंपनियां और 5,000 भारतीय इंजीनियर पहले से काम कर रहे हैं और भारतीय कंपनियां जापानी बाजार के लिए सापऊटवेयर इंजीनियरों के प्रशिक्षण के लिए उल्लेखनीय प्रयास कर रही है। देश के माध्यमिक स्कूलों में जापानी भाषा को वैकल्पिक विदेशी भाषा के रूप में शामिल किया जा चुका है तथा सरकार भारत में जापानी भाषा सीखने के अवसर बढ़ाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। मैं जापानी उद्योग से आग्रह करूंगा कि वे भी भारत की सूचना प्रौद्योगिकी फायदों का उसी तरह लाभ उठाएं जिस प्रकार अमरीका और यूरोप की कंपनियां इसका फायदा उठा रही हैं।

भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में ऊर्जा की मांग काफी बढ़ेगी। ऊर्जा खपत के मामले में किफायती और पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में जापानी और भारतीय कपंनियों के बीच सहयोग के काफी अवसर मौजूद हैं। हमें इस गुप्त क्षमता का पूरा लाभ उठाना चाहिए।

प्रधानमंत्री आबे और मैं, दोनों देशों की पारंपरिक मित्रता में नई जान फूंकने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध हैं। हमारा भारत और जापान के बीच व्यापक आर्थिक सहभागिता समझौते पर वार्ता शुरू करने का प्रस्ताव है।

मैं युवा, ओजस्वी और आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत में आपको आमंत्रित करता हूं। यहां के अरबों लोग जीवंत लोकतंत्र, खुले समाज और खुली अर्थव्यवस्था के फ्रेमवर्क में सामाजिक-आर्थिक प्रगति का रास्ता तलाश रहे हैं। भारत की खुली अर्थव्यवस्था तथा जीवंत लोकतंत्र बुनियादी मानव अधिकारों और कानून के शासन के सम्मान के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। मैं सृजनशीलता और उद्यमिता की इस ऐतिहासिक यात्रा में शामिल होने के लिए आप सभी को आमंत्रित करता हूं।

मुझे पूरा विश्वास है कि 21वीं शताब्दी एशिया की शताब्दी होगी लेकिन इसे सुनिश्चित बनाने और इसे वैश्विक समृद्धि तथा सभी के लिए शांति में तब्दील करने के लिए जापान और भारत को मिलकर काम करना होगा। मैं एक नये भारत, एक नये एशिया और एक नई दुनिया के निर्माण कार्य में आप सभी को शामिल होने का निमंत्रण देता हूं।

*****